कुसुम पारीक

ई-मेल-kusumpareek71@gmail.com

चिदम्बर रहस्य

कानों ही कानों में बात घूमती हुई सर्वत्र फैल चुकी थी।

पहुँचती भी कैसे नहीं, आखिर आज शिव और शक्ति के बीच नृत्य प्रतियोगिता थी।

सारे देवी-देवता, गंधर्व, किन्नर, यक्ष सब व्यग्रता से उत्सुक थे इस अद्भुत पल के साक्षी बनने को।

जैसे ही नृत्य शुरू हुआ—अद्भुत ताल, लय और कला का संगम देखते ही बनता था।

सभी मंत्रमुग्ध हो उन्हें देख रहे थे।

कोई कयास नहीं था जीत-हार का।

शक्ति की प्रत्येक मुद्राएँ प्रशंसनीय थीं।

लग रहा था कि आज वही जीतेंगी। उत्सव, खुशी, मिलन, कृतज्ञता, उत्साह और असीम शांति से भरी एक दिव्य अनुभूति थी उस नृत्य में।

नृत्य करते हुए अचानक शिव ने अपना एक पाँव ऊपर उठा दिया, दूसरा पाँव *अपस्मार* पर था।

शक्ति हतप्रभ थीं; मंत्रमुग्ध-सी वहीं थम गईं—चकित, भाव-विभोर होकर। चकोर की भाँति एकटक देखती रही।

वाक और विचार दोनों ही अपना अर्थ उद्घटित किये बिना ही शक्ति के पास से लौट गए थे। उसके अंदर धीरे-धीरे सब-कुछ पिघल रहा था।

अब वहाँ केवल सत्य था, वही होश था, वही बोध था।

रीता सिंह 'सर्जना'

ई-मेल-:rita30singh@gmail.com

मिशन सफाई गंगा

नेता जी आज मिशन सफाई गंगा के तहत खूब भाषण दे रहे थे—

माँ गंगा जीवनदायिनी है वह हमारा पोषण करती है। उनसे हमें शुद्ध जल मिलता है, उस जल से अनाज उपजता है। अतः हम सभी का परम कर्तव्य है कि हमें गंगा को साफ- सुथरा रखना चाहिए। मिशन सफाई गंगा के अंतर्गत हमें उन्हें गंदगी से ही नहीं बचाना है, खुद भी बढ़-चढ़कर इस मिशन को सफल बनाना है। माँ गंगा के तटों के आसपास फैक्ट्रियाँ भी नहीं होनी चाहिए जिसके कारण उन्हें नुकसान पहुँच रहा है।...

तालियाँ बजती हैं और नेताजी जब जाने लगते हैं तब भीड़ में से एक आवाज गूँजती है—"सर, फिर तो माँ गंगा के समीप लगी आपकी फैक्ट्री भी बंद होनी चाहिए।"